Economics

B.A. 2nd Semester – Fundamental of Economics – Minor- NEP 2020

Lecture-02

उपयोगिता का अर्थ

अर्थशास्त्र में उपयोगिता शब्द का अभिप्राय किसी पदार्थ के उपभोग से मिलने वाली संतुष्टि से है। अर्थात उपयोगिता किसी वस्तु की वह शक्ति है जो किसी व्यक्ति की आवश्यकता को पूरा करती है। जब किसी वस्तु में आवश्यकता संतुष्ट करने की शक्ति होती है तो उसमें उपयोगिता होती है,

उपयोगिता की विशेषताएं –

- उपयोगिता एक सापेक्षिक शब्द है, यह अदृश्य है।
- उपयोगिता का कोई भौतिक रूप नहीं है।
- यह आवश्यकता की तीव्रता पर निर्भर करती है।
- यह वास्तविक उपभोग पर निर्भर नहीं करती
- उपयोगिता त्याग के बिना असंभव है।

उपयोगिता के मापन सम्बन्धी अवधारणाएं – उपयोगिता की माप के संबंध में दो विचारधाराएं प्रचलित हैं

1. गणवाचक दृष्टिकोण–**मार्शल**
2. क्रमवाचक दृष्टिकोण– **हिक्स**

मार्शल का गणवाचक दृष्टिकोण

मार्शल ने उपयोगिता को द्रव्य के माध्यम से मापने की बात कही है। उनके अनुसार उपयोगिता की गणना संख्याओं में अर्थात 10, 20, 500 आदि में की जा सकती है। ये संख्याएं बताती हैं कि संख्या 500 संख्या 10 बड़ी है। इस प्रकार मार्शल का दृष्टिकोण गणवाचक है।

क्रमवाचक दृष्टिकोण–

उपयोगिता को मापने क्रमवाची विधि का प्रयोग किया गया है। इसके अनुसार संतुष्टि को संख्याओं में नहीं मापा जा सकता है। इसके अंतर्गत जो वस्तुएं ज्यादा संतुष्टि प्रदान करती हैं उनको बड़ी रैंक दी जाती है और जो कम संतुष्टि देती है उसको कम रैंक दिया जाता है। इसके अन्तर्गत संतुष्टि के स्तर को ज्यादा, कम, और कम में व्यक्त किया जात है।

उपयोगिता के प्रकार–

1– कुल उपयोगिता –

प्रत्येक वस्तओं से प्राप्त उपयोगिता के योग को कुल उपयोगिता कहते हैं।

TU = U1 + U2+ U3+……Un

अथवा,

TU = U + (MU2 + MU3 ...)

TU = कुल उपयोगिता

U = उपयोगिता, MU= सीमान्त उपयोगिता है।

2. **सीमांत उपयोगिता –**

सीमांत से आशय किसी वस्तु की अंतिम इकाई सीमांत इकाई और उससे मिलने वाली उपयोगिता को सीमांत उपयोगिता कहते हैं दूसरे रूप में किसी वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई में वृद्धि या कमी से कुल उपयोगिता में जो वृद्धि या कमी होती है उसे हम सीमांत उपयोगिता कहते हैं सीमांत उपयोगिता धनात्मक ऋणात्मक एवं शून्य भी हो सकती है।

$$MU_n = TU_n - TU_{n-1}$$

अथवा

$$MU = \Delta TU / \Delta X$$

3. **औसत उपयोगिता –**

कुल उपयोगिता में से वस्तु की कुल इकाई से भाग देने पर जो शेषफल आता है उसे औसत उपयोगिता कहते हैं।

$$\text{औसत उपयोगिता} = \frac{\text{कुल उपयोगिता}}{\text{उपभोग वस्तुओं की मात्रा}}$$

घटती सीमांत उपयोगिता का नियम –

सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम मानवीय आवश्यकताओं की विशेषता बताता है जैसे जैसे कोई उपभोक्ता किसी वस्तु का अधिकाधिक उपभोग करता है वैसे वैसे उस वस्तु में उपलब्ध सीमांत उपयोगिता घटती चली जाती है। दैनिक जीवन में उपभोक्ता के पास आर्थिक इकाइयां उपभोक्ता के पास बढ़ती जाती हैं तो उस वस्तु से मिलने वाली उपयोगिता कम होती जाती हैं। **इस नियम को पहले 1854 में गोसेन ने बताया था इस नियम को मार्शल ने नाम दिया तथा जेवन्स ने इसे गोसेन का प्रथम नियम कहा।**

गोसेन के अनुसार, जब हम किसी वस्तु का लगातार उपभोग करते हैं तो उससे संतुष्टि की मात्रा तब तक निरंतर घटती जाती हैं जब तक की पूर्ण संतुष्टि की प्राप्ति नहीं हो जाती है। उदाहरण के लिए जैसे हमें बहुत भूख लगी होती है हम रोटी खाते

हैं हम शुरू में एक दो रोटी खाते हैं तो कुछ संतुष्टि मिलती है जैसे जैसे हम रोटी की मात्रा बढ़ाते जाते हैं हमारी भूख मिटती जाती है अर्थात संतुष्टि की मात्रा घट जाती है जब तक पूर्ण संतुष्टि की प्राप्ति नहीं होती

• मार्शल के अनुसार," एक मनुष्य के पास किसी वस्तु की जितनी मात्रा हो उसमें निश्चित वृद्धि के फल स्वरूप के उस व्यक्ति को जो अतिरिक्त उपयोगिता प्राप्त होती है वह उसकी मात्रा में होने वाली प्रत्येक वृद्धि के साथ कम होती जाती है।

सीमांत उपयोगिता नियम की मान्यताएं–

1. वस्तु की सभी इकाइयां एक समान है अर्थात गुण एवं आकार में सभी इकाईयां एक जैसी है
2. उपभोग प्रक्रिया के दौरान उपभोक्ता की रुचि आदत है फैशन स्वभाव तथा आय सामान रहनी चाहिए
3. बिना किसी समय अंतराल के वस्तु का उपभोग निरंतर होना चाहिए
4. वस्तु के मूल्य में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए
5. मुद्रा की सीमांत उपयोगिता स्थिर है
6. उपभोक्ता का मानसिक स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं होना चाहिए
7. उपयोगिता की संख्यात्मक माप संभव है
8. वस्तु का उपभोग उपयुक्त इकाइयों में समान होना चाहिए

वस्तु की संख्या **X**	सीमांत उप0 **MUx**	कुल उप0 **TUx**
1	8	8
2	7	15
3	6	21
4	4	25
5	2	27
6	**0**	**27**
7	–2	25

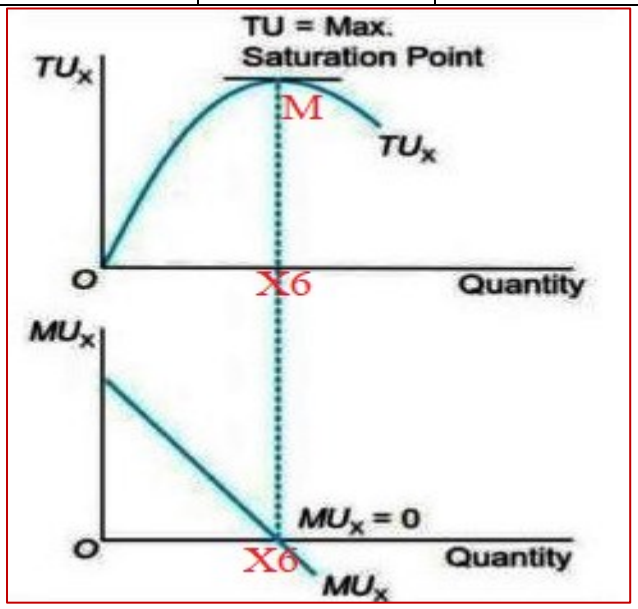

रेखाचित्र में वस्तु की एक एक इकाई उपभोग से सीमान्त उपयोगिता वक्र जैसे–जैसे गिरती जाएगी, कुल उपयोगिता रेखा ऊपर की ओर उठती रहेगी। सीमान्त उपयोगिता रेखा जैसे ही शून्य बिन्दु पर होगी, कुल उपयोगिता वक्र स्थिर (अधिकतम)

बिन्दु पर होगी। जैसे ही सीमान्त उपयोगिता ऋणात्मक होगी, कुल उपयोगिता वक्र भी नीचे की ओर घटना प्रारम्भ कर देगी।

सीमान्त तुष्टिगुण तथा कुल तुष्टिगुण में परस्पर सम्बन्ध (Mutual Relationship between Marginal Utility and Total Utility) सीमान्त तुष्टिगुण तथा कुल तुष्टिगुण में परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है, जैसा कि निम्न तथ्यों से स्पष्ट है–

- प्रारम्भिक अवस्था में वस्तु के उपभोग से सीमान्त उपयोगिता घटती है, परन्तु कुल उपयोगिता बढ़ती है।
- जब तक सीमान्त उपयोगिता धनात्मक रहता है, तब तक कुल उपयोगिता भी बढ़ती रहती है।
- जिस बिन्दु पर सीमान्त उपयोगिता शून्य हो जाता है, उस बिन्दु पर कुल उपयोगिता अधिकतम होता है। यह बिन्दु पूर्ण तृप्ति का बिन्दु कहलाता है।
- यदि पूर्ण तृप्ति के पश्चात् भी उपभोक्ता वस्तु का उपभोग करता है, तो सीमान्त उपयोगिता ऋणात्मक हो जाता है तथा कुल उपयोगिता घटने लगता है।